Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR, 2022, VOL- 9/70

भारत की भू–सामरिक स्थिति एवं ‘‘विदेश नीति’’ में अन्तर्सम्बन्ध

विरेश कुमार, Ph.D.
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय;
अलीगढ़ (उ0 प्र0)

Paper Received On: 25 APR 2022

Peer Reviewed On: 30 APR 2022

Published On: 1 MAY 2022

Abstract

एक संप्रभु राष्ट्र की अपनी स्वतंत्र विदेश नीति होती है जिसके आधार पर वह अपनी वैश्विक नीति का निर्माण करता है। भारत एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में विश्व पटल पर उभरकर आया है। अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से भारत एक बड़ा बाजार है। भौगोलिक एवं सामरिक रूप से भारत एक विशाल शक्ति है। ऐसे में वैश्विक शक्तियों का ध्यान भारत की ओर आना स्वाभाविक है। इस प्रकार भारत की विदेश नीति तथा भू–राजनीति एवं भू–सामरिकी का अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी देश की विदेश नीति को प्रभावित करने वाले कारकों में भू–राजनीतिक एवं भू–सामरिक स्थिति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भू–राजनीति शब्द राजनीति सम्बन्धों के भूगोल, विशेषरूप से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के आधारभूत संरचना को व्यक्त करता है। यह उस विज्ञान से सीधा जुड़ा हुआ है जो प्रमुख धारणाओं मुख्यतः राज्यों के कूटनीतिक कार्यो का अध्ययन करता है। पैडलफोर्ड एवं लिंकन के अनुसार ‘‘विश्व राजनीति को भौतिक भूगोल, अन्य तत्वों की तुलना में सर्वाधिक तथा निरन्तर प्रभावित करने वाला ऐसा तत्व है जो उन आवश्यकताओं लक्ष्यों नीतियो, शक्तियों आदि को प्रभावित करता है जिनको राज्य अपने हितों की दृष्टि से अपनाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में रूस–भारत–चीन (आरआईसी) एक रणनीतिक त्रिकोण है। यह किताब इस सवाल पर चर्चा करता है कि आर0आई0सी0 का निर्माण भारत के लिए किस हद तक उपयोगी है और इसे त्रिकोणीय रणनीतिक सहभागिता को आगे बढ़ाने के सुझाव की ओर होना चाहिए।

पारिभाषिक शब्दः *रणनीति त्रिकोंण, आर0आई0सी0, भूसामरिक, साम्राज्यवाद।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

परिकल्पनायेंः

1. भारत की भौगोलिक एवं सामरिक स्थिति विश्व शक्ति बनने में योगदान कर सकती हैं।
2. भारत की भू–राजनीति एवं भू–सामरिकी ने विदेश नीति को प्रभावित किया है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. भारत की भू–राजनीति एवं भू–सामरिकी का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. भारत की सामरिक सुरक्षा एवं हिन्द महासागर में महाशक्तियों के प्रभुत्व का अध्ययन।

शोध पद्धतिः अध्ययन की प्रासंगिकता प्रस्तुत शोध कार्य में, विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण : यदि हम भू–सामरिकी शब्द का विश्लेषण करें तो इसका अर्थ सहज ही समझ में आ जाता है। ळमवै.जतंजमहल शब्द दो शब्दों में बना है। प्रथम Geo जिसका अर्थ है भू (Earth) और द्वितीय स्त्रातेजी। स्त्रेतेजी का अर्थ सामान्यतया लोग युद्ध कौशल से लगाते हैं, परन्तु ये उनकी अल्पज्ञता है। स्त्रोतेजी शब्द का सीधे तौर से युद्ध से कुछ भी लेना–देना नहीं है, स्त्रोतेजी का अर्थ होता है कि किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु उपलब्ध साधनों एवं संसाधनों की उपलब्धता (भविष्य में) को तात्कालिक एवं भविष्यगत परिस्थितियों को ध्यान में रखकर नीतियों के निर्माण एवं क्रियान्वयन की योजना तैयार करना। विदेश नीति के उद्देश्यों को हासिल करने एवं नीति–निर्माताओं की स्वतन्त्रता को नियन्त्रित करने में सैनिक शक्ति को किसी भी राष्ट्र की शासन प्रणाली का आधार माना जाता है। इस परमाणु के युग में जहाँ युद्ध को एक विनाशकारी संकट समझा जाता है, वहाँ सैनिक शक्ति का अपना महत्व है।

विश्व इतिहास में भारत अपनी भौगोलिक बनावट एवं सामरिक स्थिति के कारण सदैव महत्वपूर्ण रहा है। भारत की प्राकृतिक रक्षा प्राचीर के रूप में जहाँ उत्तर की ओर महान हिमालय पर्वतमाला, वही दक्षिण की ओर हिन्द महासागर स्थिति है। इतिहास साक्षी है जब–जब भारत की सामरिक स्थिति कमजोर हुई है तो विदेशियों का प्रवेश उत्तर–पश्चिम से हुआ है। वर्तमान समय में बढ़ते समुद्री लुटरों से जहाँ हिन्द महासागर में अशान्ति बनी हुई है। वही आधुनिक तकनीकी ने दुर्गम को सुगम बना दिया है। अतः भारत को अपने हितों की सुरक्षा के लिए कारगर कदम उठाने होंगे।

सामरिक दृष्टिकोण से भारत की स्थिति ऐसे स्थान पर है जहाँ से वह पश्चिमी साम्राज्यवादी तथा पूर्वी साम्यवादी राष्ट्रों के मध्य तटस्थ रहकर सन्तुलन स्थापित किये हुए है। यही कारण है कि आज दोनों ही गुट अपने–अपने पक्ष को प्रबल बनाने के लिए भारत से सैनिक समझौता करने के इच्छुक हैं। भारत की आर्थिक स्थिति उस शक्ति पर निर्भर रही है जिसने हिन्द महासागर पर आधिपत्य स्थापित किया। 6200 किमी0 लम्बी तटीय रेखा वाला भारत यदि हिन्द महासागर में असुरक्षित रहता है तो इसका भविष्य ही असुरक्षित है। इसलिए भारत की इस भौगोलिक स्थिति के कारण उसकी जल तथा वायु शक्ति को इस प्रकार सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए कि वह इतनी शक्तिशाली हो जाये कि हिन्द महासागर और उसकी स्थितियों तथा प्रवेश द्वारों पर नियंत्रण के साथ हिन्द महासागर पर प्रभुत्व स्थापित कर सके। भारत की स्थिति उत्तरी गोलार्द्ध में एक ऐसे स्थान पर है जहाँ से आस्ट्रेलिया, अफ्रीका और यूरोप महाद्वीप उससे लगभग समान दूरी पर है। इन महाद्वीपों से भारत का सम्बन्ध जल तथा वायु मार्गो से जुड़ा हुआ

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

है। इस प्रकार भारत विश्व के सभी राष्ट्रों के साथ राजनैतिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध सरलता से स्थापित कर सकता है। भारत की धरातलीय रचना इस प्रकार की है जो तीनों सेनाओं को विकसित कर सकता है। उत्तरी क्षेत्रों की रक्षा हेतु स्थल सेना तथा तटीय क्षेत्रों की सुरक्षा हेतु सशक्त नौ सेना की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त देश का आकार विस्तृत होने से हमारे वायुमान स्वतंत्रता पूर्वक उड़ान भर सकते है तथा भारतीय वायु सेना उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है। वायुशक्ति द्वारा हिमालय पर्वतीय क्षेत्र की भी सुरक्षा की जा सकती है। विस्तार के कारण ही भारत की स्थिति ऐसी है जो काफी समय तक युद्ध को जारी रहने में समर्थ हो सकते है, क्योंकि युद्ध में कभी–कभी शत्रु को चकमा देने के लिए पीछे भी हटना पड़ता है। अतः विस्तृत क्षेत्र होने के कारण भारत ऐसी स्थिति उत्पन्न कर सकता है। विस्तार के कारण ही समीपवर्ती छोटे–छोटे राज्य विस्तृत क्षेत्र वाले राष्ट्र से अपने सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं, इसी कारण भूटान, नेपाल, सिक्किम तथा श्रीलंका भारत के सीमावर्ती देश हैं।

व्यापारिक दृष्टिकोण से भारत एक ऐसा केन्द्र है जहाँ पर विश्व के प्रमुख समुद्री मार्ग स्वेज नहर के माध्यम से भारत एवं अन्य पूर्वी राज्यों से जुड़ा हुआ है, दूसरी तरफ पूर्व एवं सम्पूर्ण दक्षिण पूर्व राष्ट्र सिंगापुर के रास्ते से भारत से सम्बन्ध है। दक्षिण–पश्चिम दिशा से अफ्रीका का सम्पर्क भारत से केप ऑफ गुड होप मार्ग से जुड़ा हुआ है दूसरी ओर पूर्वी आस्ट्रेलिया जिसे आर्थिक आस्ट्रेलिया भी कहते हैं, न्यूजीलैण्ड फिजी आदि का सम्पर्क आस्ट्रेलिया मार्ग द्वारा भारत से होता है। इस तरह दुनिया के प्रमुख व्यापारिक आदि का सम्पर्क आस्ट्रेलिया मार्ग द्वारा भारत से होता है। इस तरह दुनिया के प्रमुख व्यापारिक मार्गो का, भारत केन्द्र बिन्दु हैं। भारत की यह स्थिति केवल एशिया को नही अपितु सम्पूर्ण संसार सम्बन्धों से संसार के अधिकांश राष्ट्रों से जुड़ा हुआ है। अपने इस महत्वपूर्ण भू–सामरिक स्थिति के कारण भारत को अपनी सुरक्षा हेतु अत्यधिक मजबूत स्थिति प्राप्त करने की चुनौती है। विदेश नीति राष्ट्रीय हितों, सिद्धान्तों एवं उद्देश्यों का एक जोड़ है। प्रत्येक देश अन्य देशों के साथ अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप सम्बन्धों का निर्धारण करता है। विदेश नीति एक जटिल प्रक्रिया है जिस पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का प्रभाव परिलक्षित होता है। भारत की विदेश नीति निर्धारण में जिन कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं उनमें भारत की भू–राजनीतिक एवं भू–सामरिक स्थिति, सभ्यता एवं संस्कृति, ऐतिहासिक परम्परायें, राजनीतिक व्यवस्था, राष्ट्रीय नेताओं का मनोबल एवं राजनीतिक और आर्थिक विचार धाराओं का प्रमुख स्थान है। भारतीय विदेश नीति निर्माताओं के सामने प्राचीन दार्शनिक कौटिल्य का 'सप्तांग सिद्धान्त एवं मंडल सिद्धान्त' एवं महात्मा बुद्ध का दर्शन, सम्राट अशोक की वैदेशिक नीति के साथ–साथ महात्मा गांधी के सिद्धान्त प्रेरणा योग्य हैं। भारत विश्व में क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से सातवां एवं जनसंख्या के दृष्टिकोण से दूसरा स्थान रखता है। भारत की भौगोलिक सीमा प्राकृतिक रूप से उत्तर की ओर

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हिमालय एवं दक्षिण की ओर हिन्द महासागर से घिरी होने के कारण इसकी सामरिक स्थिति को सशक्त करती है। दक्षिण एशिया में भारत सभी पड़ोसी देशों से साझा सीमा बनाता है, साथ ही मध्य एशिया एवं दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ने का संगम स्थल है। भारत के पास विशाल अनन्य आर्थिक क्षेत्र के रूप में हिन्द महासागर का भाग है, जिसमें भारत के द्वीपीय क्षेत्र स्थित है। अतः भारत के लिए हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र के रूप में होना विशेष महत्व रखता है। देश की विदेश नीति पर भौगोलिक कारकों का प्रभाव निम्न क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

1. देश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेखा,
2. हिन्द महासागर एवं उसके द्वीप,
3. साझा नदियां, भारत की विशाल स्थलीय सीमा 15200 कि0मी0 है। जो बांग्लादेश, चीन, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार, भूटान तथा अफगानिस्तान को छूती है। लेकिन पड़ोसी देशों की सीमा रेखा पर हाल में ही कुछ गतिविधियों ने विदेशी सम्बन्धों को नये आयाम प्रदान किये है ।

हिंद महासागर क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए युद्ध और शांति जैसे प्रमुख प्रश्न पर प्रमुख शक्तियों के टकराव और अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों के अन्य मुख्य बिन्दुओं पर विचार किया गया है। हिन्द महासागार के इसी भू–राजनीतिक, सैनिक व आर्थिक महत्व को ध्यान में रखकर अमेरिका, जापान, चीन सहित सभी पश्चिमी देशों के लिए यह क्षेत्र आकर्षण का केन्द्र रहा है। 21वीं शताब्दी में यदि ये राष्ट्र इस क्षेत्र में और सक्रिय व शक्तिशाली हुए तो हिन्द महासागर में अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो जाएगीं जिसका सीधा प्रभाव भारत पर पड़ेगा। इस क्षेत्र में अमेरिका सबसे शक्तिशाली बाह्य शक्ति है। चीन हिन्द महासागर में अपनी नौ सैनिक शक्ति का विस्तार कर रहा है, साथ ही चीन पाकिस्ताान, बांग्लादेश व म्यांमार से निकटता बनाए हुए है जिससे कि उसे हिन्द महासागर में बंदरगाहों की सुविधा मिल सके। इस पुस्तक में यह भी उल्लेख किया गया है कि कई सदियों से इस क्षेत्र पर यूरोपीय देशों का उपनिवेशवादी प्रभुत्व बना रहा। लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् औपनिवेशिक प्रणाली के तेजी से पतन के साथ–साथ विश्व राजनीति में हिंद महासागर क्षेत्र की स्वतंत्र भूमिका भी बढ़ती गयी। प्रत्येक राज्य की विदेश नीति को उसकी भौगोलिक स्थितियां काफी सीमा तक प्रभावित करती है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के व्याख्याकार इस बात पर सहमत हैं कि राज्य का भूगोल बहुत कुछ नीति की दिशा निर्धारित कर देता है। भौगोलिक एवं भू–सामरिक स्थिति एक ऐसा तत्व है जिसकी अवहेलना विश्व का कोई भी राष्ट्र चाहे वह हिमालय से ऊँचा मनोबल क्यों न रखता हो, नहीं कर सकता, क्योंकि राष्ट्रों की शांति, सुरक्षा और प्रगति का अध्याय भौगोलिक कारकों से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। इसी प्रकार भू–राजनीति ऐसे विज्ञान से जुड़ी है जिसमें राष्ट्रों के राजनीतिक क्रियाकलापों के ऊपर उनकी स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को कायम करने

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तथा संधियों द्वारा शांति की स्थापना का क्षेत्र भू–राजनीति से जुड़ा है। भूगोल के क्षेत्र में भू–राजनीतिक के प्रवेश से युद्ध योजना के लिए साश्वत आधार प्रदान करने में इसका दायित्व बड़े महत्व का है। इतिहास साक्षी है, राष्ट्र के निर्माण, सुरक्षा एवं राष्ट्रीय शक्ति के विकास में अनेक देशों ने अपने प्राकृतिक वातावरण से असीमित लाभ प्राप्त किया है। किसी देश की युद्ध कला को प्रभावित करने में भी इन भौगोलिक कारकों का स्थान सर्वोपरि है क्योंकि युद्ध एक भौगोलिक तथ्य है और भौगोलिक तथ्यों के ज्ञान के अभाव में कोई भी युद्ध लड़ा ही नहीं जा सकता।

निष्कर्षः एक लम्बे समय से विचारशील भारत, रूस और चीन में रणनीतिक रूप से चर्चा का विषय बना हुआ है। दिसम्बर 2014 में राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा के बाद रूसी मीडिया में ट्राइएंगल ने नए सिरे से ध्यान आकर्षित किया है। रूस पर लगाए गए पश्चिमी अनुमोदन की पृष्ठभूमि के खिलाफ और भारत के साथ अपनी घनिष्ठता को याद करते हुए और चीन के साथ बढ़ते सम्बन्धों को याद करते हुए, कुछ रूसी अखबार के लेखों ने इस धारणा को फिर से दोहराया है कि अंतर्राष्ट्रीय मामलों में रूस–भारत–चीन (आरआईसी) एक रणनीतिक त्रिकोण है। यह किताब इस सवाल पर चर्चा करता है कि आर0आई0सी0 का निर्माण भारत के लिए किस हद तक उपयोगी है और इसे त्रिकोणीय रणनीतिक सहभागिता को आगे बढ़ाने के सुझाव की ओर होना चाहिए।

References:

Bajpai K. (2010), 'The Peakock and the Dragon, IndoChina Relations in the 21st Century',

Ojha S. (2012), Bhartiya Videsh Niti Ka Moolyankan, Jaipur, Printval Publications.

Yadav Janardan (2009), India's Foreign Policy: Contemporary Trends, Delhi: Shipra Publications.

Dixit Rajesh (2008) "A Crass Borders: Fifty years of India's Foreign Policy" New Delhi,

Sharma Ajay (2006), 'South Asia and United States Policy', Boston: Houghton Mifflin Company.

Ahmad Mahim (2009), 'Foreign Policies in South Asia', Orient Longmans Press, Bombay.

Bhaskar Vishal (2016), Foreign Policies and Geographical Conditions, New Delhi: Raj Kamal Publication.

Singh N. (2017), Bharat Vs Pakistan: Hum Kyon Dost Nahin Ho Sakte? , Krish Publications,Jaipur Rajasthan.

Saraswat, S.K. (2016), Pakistan: Jinnah Se Jehad Tak,

Raina A. M. (2007), 'United States Policies in the Indian Ocean', Central Publisher: Nai Sadak, New Delhi.

Ajay Malhora (2015) has discussed in his famous book "India-Russia-China: is There a Case for Strategic Partnership? ' Amitesh Publications, Bhopal , M.P.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies